प्रकाशन तिथि : 01 मार्च, 2022
प्रेषण तिथि : 04 मार्च, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 24 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

पारिवारिक जीवन का आधार है सहनशीलता: संरक्षक श्री

महिला ही पुरुष को बनाती है। 'माता निर्माता भवति' और ऐसी माता का सम्मान होना ही चाहिए, ऐसा श्री क्षत्रिय युवक संघ मानता है। पूज्य तनसिंह जी समाज को भी माँ के रूप में देखते थे और इसीलिए वे कभी ऐसा नहीं कहते थे कि समाज को सुधारना हमारा काम है क्योंकि मां को कभी सुधारा नहीं जाता, उसकी तो सेवा की जाती है। समाज के प्रति उनके मन में इतना सम्मान था। व्यक्तिगत रूप से भी मैंने देखा है कि वे अपनी माता का भी कितना सम्मान करते थे। कोई भी कार्य उनकी अनुमति के बिना नहीं करते थे। यदि किसी कार्य के लिए उनकी माताजी ने ना नहीं कहा किन्तु हाँ भी नहीं कहा तो वे उनके मौन को भी उनकी अस्वीकृति मानते थे और उस कार्य को करने का विचार त्याग देते थे। इसी कौटुंबिय भाव को उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ का आधार बनाया। पूरे समाज को एक कौटुंबिक इकाई बनाने का प्रयत्न संघ कर रहा है और इसीलिए ऐसे पारिवारिक स्नेहभोज कार्यक्रमों का आयोजन प्रारंभ हुआ। उदयपुर स्थित आईटीपीआई भवन में 20 फरवरी को आयोजित पारिवारिक स्नेहमिलन व स्नेहभोज कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक श्री माननीय श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी जब विश्व धर्म सभा में भाषण देने के लिए गए थे तब किसी को उम्मीद नहीं थी कि वे अच्छा बोल पाएंगे और अपने धर्म का, अपने देश का प्रचार कर पाएंगे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

माननीय संरक्षक श्री के सान्निध्य में दम्पति शिविर संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय दम्पति शिविर 12 से 15 फरवरी तक आलोक आश्रम बाड़मेर में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर के सान्निध्य में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन जोरावर सिंह भादला ने किया।

उन्होंने दाम्पत्य जीवन के विभिन्न पक्षों पर चर्चा करते हुए दांपत्य जीवन में पालन किए जाने वाले आदर्श, हमारे आहार, वेशभूषा, भाषा आदि के सांस्कृतिक आदर्श, अपने दायित्व का पालन करते हुए जीवन के परम लक्ष्य की ओर बढ़ने में परिवार की भूमिका जैसे विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि परिवार समाज और व्यक्ति के बीच की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इस कड़ी के सुदृढ़ होने पर ही व्यक्ति का विकास और समाज की स्थिरता निर्भर करती है और परिवार तभी सुदृढ बनेगा जब दंपति के रूप में हम अपने दायित्वों का ठीक प्रकार से निर्वहन करेंगे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'हृदय कपाट को खुले रख कर संघ को प्रवेश करने दें'

(दम्पति शिविर में माननीय संरक्षक श्री द्वारा प्रदत्त विदाई उद्बोधन का संपादित अंश)

अभी जो विदाई गीत गाया 'कियाँ दे दूं रे थाने सीख', यह पूज्य तनसिंह जी के हृदय के भाव हैं। यह उनका अनुग्रह था, उनका आग्रह भी था जो इसमें बताया गया है। ओलमा भी दिया है, निमंत्रण भी दिया है। जब बोलते थे तो हम यूँ सोचते हैं कि वे सोच सोच कर बोलते थे, ऐसा नहीं था। ये उद्गार दिल की गहराइयों से बाहर निकलते थे। एक नहीं अनेक बार इस विदाई के गीत पर इसी तरह से लोग रोते रहे हैं और लोग रोते तो वे डांटते थे कि तुम रो रहे हो? जिन आंखों में आंसू हैं उनमें लाल डोरे होने चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

माननीय संघप्रमुख श्री का बीकानेर प्रवास, विभिन्न स्थानों पर स्नेहमिलन संपन्न

माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास 23 फरवरी को बीकानेर संभाग के दौरे पर रहे। इस दौरान पायली, लखासर, झंझेऊ व नारायण निकेतन (बीकानेर) में कार्यक्रम आयोजित हुए। रतनगढ़ के समीप पायली गांव स्थित ओम बना मंदिर में माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में स्नेहमिलन का आयोजन हुआ। उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि पूज्य श्री तन सिंह जी ने समाज को मातृस्वरूप में अंगीकार किया और समाज रूपी माता की पीड़ा से व्यथित होकर उसके निराकरण हेतु एक व्यावहारिक मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में हमारे

समक्ष रखा। यह गीता में वर्णित अभ्यास और वैराग्य पर आधारित मार्ग है और इस मार्ग पर चलकर ही क्षत्रिय के गुणों का उपार्जन किया जा सकता है। ईश्वर की कृपा से हमें क्षत्रिय कुल में जन्म मिला है तो हमारा कर्तव्य है कि हम क्षत्रिय के गुणों को अर्जित करें, उन्हें धारण करें। ऐसा करके हम समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए उपयोगी बनें, यह समय की मांग है और इस मांग को पूरा करने के लिए संघ कार्य कर रहा है। स्नेहमिलन में पायली के अलावा भरपालसर, नुवां, आलसर, परसनेऊ, लूणासर, पाबूसर, बामण्या, जालेऊ, सेहला, गौरीसर, गेंगनिया आदि गांवों के समाजबंधु भी सम्मिलित हुए। सुमेर सिंह गुड़ा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया और श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य को क्षेत्र में विस्तारित करने की आवश्यकता जताई। केन्द्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ, संभागप्रमुख रेवंत सिंह जाखासर और प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह आलसर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जसवंत सिंह पायली ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। यहां से माननीय संघ प्रमुख श्री डूंगरगढ़ क्षेत्र के लखासर गांव पहुंचे। यहां राजपूत संस्था भवन में स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि पूज्य श्री तन सिंह जी के अभियान को घर-घर तक पहुंचाने के लिए हमें स्वयं से शुरूआत करनी होगी क्योंकि स्वयं जागकर ही समाज और संसार में जागृति का संघ फूंका जा सकता है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मंदसोर में पारिवारिक स्नेहमिलन संपन्न

मंदसोर स्थित श्री प्रताप समाज भवन में विगत 13 फरवरी (रविवार) को संघ के मालवा प्रांत द्वारा पारिवारिक स्नेहमिलन आयोजित किया गया जिसमें मंदसोर में निवासरत समाज बंधुओं के साथ साथ आस पास के गांवों के लोग भी शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए केन्द्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया। राजपूत समाज मंदसोर के अध्यक्ष महेंद्र सिंह जी फतेहगढ़ ने विगत 7-8 वर्षों से मालवा क्षेत्र में हो रहे संघकार्य की जानकारी दी एवं आज के पारिवारिक कार्यक्रम की पृष्ठभूमि बताते हुए सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केन्द्रीय कार्यकारी रेवंतसिंह पाटोदा ने कहा कि विगत आठ वर्षों से इस क्षेत्र में संघ का काम चल रहा है और फिर भी इस क्षेत्र के सभी लोग श्री क्षत्रिय युवक संघ से परिचित नहीं है। ऐसी स्थिति यहां ही नहीं है बल्कि पूरे राजपूत समाज की यही स्थिति है। जहां विगत 75 वर्षों से संघ काम कर रहा है वहां भी सभी लोग संघ को नहीं जानते हैं। आपको आश्चर्य हो सकता है कि ऐसा क्यों है, क्यों संघ लोगों में प्रचारित नहीं हो पाता तो उसका उत्तर खोजेंगे तो हम पायेंगे कि संघ का काम ही ऐसा है। संघ अधिकारों की मांग के लिए नहीं बल्कि दायित्वों के निर्वहन की पाठशाला है और ऐसी पाठशालाओं का कार्यक्षेत्र प्रचार माध्यम न होकर समाज के कोलाहल से दूर एकांत स्थल होते हैं जहाँ हमारे वंशानुक्रम की उज्ज्वल विशेषताओं को क्रियाशील करने के लिए अभ्यास करवाया जाता है। आज के संसार के समस्त क्रियाकलाप अधिकारों के इर्दगिर्द संचालित होते हैं इसीलिए हमारा ध्यान दायित्व निर्वहन की शिक्षा की ओर जाता ही नहीं है और इसीलिए समाज संघ से परिचित नहीं है। लेकिन विचारणीय विषय जो इससे प्रकट होता है वह यह है कि जिस रजपूती के कारण या जिस क्षत्रियत्व के कारण राजपूत या क्षत्रिय के रूप में हमारा अस्तित्व रह सकता है उसके प्रति हम कितने उदासीन हैं और यही उदासीनता पूज्य तनसिंह जी की पीड़ा थी जो श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रकट हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ विगत 75 वर्षों से इसी पीड़ा के निवारण में संलग्न है। पूज्य तनसिंह जी का यह मानना था कि हमारा मार्ग त्याग व उत्सर्गमूलक क्षात्र परंपरा का मार्ग है। हम इस मार्ग से च्युत हुए उसी का परिणाम हमारी वर्तमान स्थिति है और इस स्थिति से उबरने का एक मात्र मार्ग धैर्यपूर्वक क्षात्र परंपरा की ओर लौटना है। संघ धैर्यपूर्वक इसी कार्य में संलग्न है। मंदसोर विधायक यशपालसिंह सिसोदिया ने कहा कि संघ की प्रणाली की आवश्यकता को समझने और मालवा क्षेत्र में उसकी पूर्ति के लिए निरंतर प्रयासरत रहने की आवश्यकता है। श्री मती दुर्गेश भाटी ने बालिका शिक्षा व संस्कार निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया।

'मेहा मांगलिया' महाकाव्य का लोकार्पण समारोह

साहित्य अकादमी के युवा पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार महेंद्र सिंह छायण द्वारा रचित राजस्थानी महाकाव्य 'मेहा मांगलिया' का लोकार्पण समारोह बापिणी स्थित मेहाजी मंदिर में संपन्न हुआ। लोक देवता मेहाजी के जीवन चरित्र पर आधारित इस महाकाव्य में उनके शौर्य, त्याग और महान चरित्र का साहित्यिक वर्णन किया गया है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. आईदान सिंह भाटी ने कहा कि यह रचना सभी के लिए प्रेरणादायक है और मुझे विश्वास है कि राजस्थानी साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान रहेगा। बाबा रामदेव विद्यापीठ के निदेशक डॉ. विजय सिंह राजपुरोहित ने कहा कि झुंझार मेहाजी कि यह यशोगाथा महेंद्र सिंह छायण के कड़े परिश्रम का परिणाम है और उनकी साहित्यिक प्रतिभा की स्पष्ट झलक इस महाकाव्य से मिलती है। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार भंवरलाल सुथार, युवा लेखक नाथू सिंह इंदा व प्रभु सिंह बुड़किया को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सूबेदार दीप सिंह ने किया।

कुमावत समाज के साथ बैठक सम्पन्न

23 फरवरी को बाड़मेर के शिव कस्बे में कुमावत समाज के साथ बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में संघ के स्वयंसेवक राजेंद्र सिंह भिंयाड (द्वितीय) ने पूज्य तनसिंह जी व श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय प्रस्तुत किया। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय परिषद के सदस्य महेंद्र सिंह तारातरा ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी के अनुसार क्षत्रिय वही है जो सबको साथ लेकर चले। पीढ़ियों से सभी जातियों में आपसी प्रेम व सौहार्द रहा, समय के आपसी संबंधों में दूरियां पनपी जिसे अब दूर करके पुनः अपनत्व के भाव को जागृत करना होगा। फाउंडेशन सभी जाति वर्ग के लोगो के साथ आपसी प्रेम व सद्भाव बढ़ाने की बात करता है। संविधान व लोकतंत्र में विश्वास व आदर भाव जागृत करने हेतु प्रयासरत है। सकारात्मक माहौल में हुई बैठक में दीनदयाल कुमावत, मफतलाल कुमावत,रमेश कुमावत, तखता राम कुमावत, जगदीश लीमा ने अपने विचार रखे। बैठक में वीरमाराम कुमावत, कंवराज सिंह मुंगेरिया, उदाराम मुंगेरिया, अशोक बोरावत, मुकेश कुमावत, दिलीप बोरावट, सुमेर कुमावत, प्रेम सिंह भाटी, मोहनलाल कुमावत, नरेशपाल सिंह तेजमालता, तनेराज सिंह बलाई, तनवीर सिंह फोगेरा आदि उपस्थित रहे।

पाली जिले में निरन्तर जारी हैं शिक्षा नेग की पहल का प्रसार

पाली जिले में राजपूत शिक्षा कोष ट्रस्ट द्वारा राजपूत समाज के आर्थिक रूप से कमजोर बालक बालिकाओं की शिक्षा में सहायता के उद्देश्य से विवाह आदि समारोह में 'शिक्षा नेग' के रूप में सहयोग की पहल निरंतर प्रसार पा रही है। इसी क्रम में जिले के सोवनिया गांव निवासी भीम सिंह ने अपनी पुत्री निकेश चंपावत के विवाह के अवसर पर शिक्षा नेग के रूप में आर्थिक सहायता भेंट की। वर पक्ष की ओर से विक्रम सिंह भानपुरा व योगेंद्र सिंह भानपुरा ने भी सहयोग किया। इसी प्रकार रानी तहसील के खूनी का गुड़ा गांव में पाबू सिंह महेचा ने अपने पुत्र महिपाल सिंह के विवाह के अवसर पर सहयोग किया। बाली क्षेत्र के मालारी गांव में मेघ सिंह चंपावत ने अपने पुत्र कृष्णपाल सिंह के विवाह में शिक्षा नेग के रूप में सहयोग किया। इसी प्रकार सिंघासनी गांव में भगवान सिंह ने अपने पुत्र के विवाह में इस पहल के अंतर्गत आर्थिक सहयोग दिया। मनोहर सिंह कुरना ने भी सहयोग दिया। पूर्व सांसद नारायण सिंह माणकलाव, विधायक पुष्पेंद्र सिंह राणावत व गिरवर सिंह उदेशी कुआं ने समाजबंधुओं के इस सहयोगी भाव की सराहना करते हुए सभी का आभार प्रकट किया।

संरक्षक श्री के सानिध्य में सामाजिक परिचर्चा का आयोजन

19 फरवरी को उदयपुर में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा सामाजिक परिचर्चा का कार्यक्रम आईटीपीआई भवन में आयोजित किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सिर्फ क्षत्रिय कुल में जन्म लेने मात्र से ही हम क्षत्रिय नहीं हो जाते बल्कि हमारा आचरण, हमारे संस्कार भी क्षत्रियोचित होने चाहिए। हमें मन-कर्म-वचन से क्षत्रिय होना पड़ेगा। आज जहां सभी ओर चारित्रिक ह्रास हो रहा है, ऐसी परिस्थिति में हमें अपने निजी व सार्वजनिक जीवन में श्रेष्ठ चरित्र के आदर्श स्थापित करने चाहिए। ऐसा करने पर हमारी सकारात्मकता केवल हमारी जाति तक सीमित नहीं रहकर सभी के लिए प्रेरणादायी बनेगी। हमें स्वयं को जातिवाद, वर्गवाद व अहंकार से ऊपर

उठाना होगा, सम्यक आचरण करना होगा और पुरुषार्थी बनना पड़ेगा तभी समाज में फैला आपसी वैमनस्य समाप्त हो सकेगा। समभाव हमारी विशेषता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से जो संवाद होता है वही सामाजिक परिवर्तन का बीज बनता है इसलिए आपसी संवाद को निरंतर बनाए रखना है। इस प्रकार के संवाद से जो सामाजिक भाव पनपता है उसके रक्षण व संवर्धन का दायित्व भी हमारा ही है। लेकिन समाज की सेवा में हमें स्वयं की भूमिका रामसेतु निर्माण में लगी उस नन्हीं गिलहरी के समान रखनी चाहिए जिसका प्रयत्न भले ही छोटा हो लेकिन उस प्रयत्न में उसकी सम्पूर्ण क्षमता लगी होती है। ऐसा पुरुषार्थ और भाव हमारा रहेगा तो हममें अहंकार नहीं जागेगा। केंद्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली ने उपास्थित समाजबंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के संबंध में जानकारी प्रदान की। बृजराजसिंह खारड़ा, भँवर सिंह बेमला, लक्ष्मण सिंह भाटी, फतेह सिंह भटवाड़ा, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केंद्रीय कार्य समिति के सदस्य दलपत सिंह गुड़ा केसर सिंह, भानु प्रताप सिंह झीलवाडा, प्रद्युम्न सिंह गुड़ा, गजेंद्र सिंह नाल का गुड़ा, शुरवीर सिंह सोड़ावास, दिग्विजय सिंह लांबापारडा, लाखन सिंह, कमल सिंह बेमला सहित अनेकों सहयोगी व समाजबंधु उपस्थित रहे।

कार्य विस्तार बैठकें कर दिया सकारात्मक क्रियाशीलता का संदेश

श्री क्षत्रिय युवक संघ के अनुषांगिक संगठन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की नवगठित केंद्रीय परिषद की पुष्कर में आयोजित बैठक के बाद अब राज्य भर में अलग अलग बैठकें आयोजित कर केन्द्रीय परिषद के निर्णयों के अनुरूप कार्य करने के लिए कार्य विस्तार बैठकों का आयोजन कर सकारात्मक क्रियाशीलता के संदेश को प्रसारित किया जा रहा है। 13 फरवरी को राज्य के 7 जिलों में विभिन्न जगहों पर बैठक आयोजित की गई। चित्तौड़गढ़ जिले की गंगरार तहसील क्षेत्र की बैठक का आयोजन गंगरार में हुआ। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली के सानिध्य में आयोजित इस बैठक में फाउंडेशन के प्रभारी कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की स्थापना के उद्देश्य एवं उसे व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करने के कार्ययोजना बिंदुओं पर विस्तार से जानकारी दी गई। बैठक में SKPF की केंद्रीय परिषद के सदस्य हर्षवर्धन सिंह रूद, पूर्व जिला प्रमुख भैरु सिंह निंबाहेड़ा, पूर्व प्रधान शक्ति सिंह मुरलिया, पूर्व प्रधान देवीसिंह छोगावड़ी, वर्तमान प्रधान प्रतिनिधि रविंद्र सिंह छोगावड़ी, मेवाड़ क्षत्रिय महासभा के मनोहर सिंह सोनियाना आदि वरिष्ठ जनों सहित अनेक युवा साथी भी उपस्थित रहे। सभी ने फाउंडेशन के विचार को ग्राम स्तर पर पहुंचाने के लिए सक्रिय सहयोगी बनने का आश्वासन दिया। नागौर जिले के परबतसर विधानसभा क्षेत्र की बैठक का आयोजन किनसरिया में किया गया। बैठक में SKPF के उद्देश्यों व कार्यों पर जयसिंह सागूबड़ी ने विस्तार से बताया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा ने उपस्थित लोगों को SKPF के कार्यों की जिम्मेदारी लेने हेतु प्रेरित किया। बैठक को दलपतसिंह रूणीजा, मानसिंह किनसरिया ने भी संबोधित किया तथा उपस्थित समाज बंधुओं ने SKPF के कार्यों को गांव गांव तक पहुंचाने के सुझाव दिए और जिम्मेदारी भी ली। अजमेर जिले की जूनिया बघेरा क्षेत्र की बैठक का आयोजन छाबड़िया गढ़ में किया गया। जिसमें SKPF की केंद्रीय परिषद के सदस्य देशराज सिंह लिसाडिया ने फाउंडेशन के उद्देश्य व कार्यों के बारे में विस्तार से बताया और उपस्थित समाज बंधुओं को जिम्मेदारियां सौंपी गई। राजसमंद जिले के नाथद्वारा तहसील की बैठक आयोजित हुई जिसमें नाथद्वारा क्षेत्र में फाउंडेशन के कार्य विस्तार पर सार्थक चर्चा की गई। बैठक में SKPF की केंद्रीय परिषद के सदस्य दलपत सिंह गुड़ा केसर सिंह, भानु प्रताप सिंह झीलवाड़ा ने उद्देश्य व कार्यों के बारे में बताया। इस बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के मेवाड़-वागड़ संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला ने भी अपने विचार रखे। बैठक में उपस्थित विभिन्न समाज बंधुओं को SKPF के उद्देश्य व कार्यों को ग्राम स्तर पर ले जाने हेतु जिम्मेदारियां सौंपी गई। इसी दिन उदयपुर राजसमंद क्षेत्र के मेडिकल व पैरामेडिकल में कार्यरत राजपूत समाज के लोगों के साथ SKPF के बैनर तले एक समन्वय बैठक उदयपुर के बीएन सभागार में आयोजित हुई। केन्द्रीय परिषद के सदस्य प्रकाश सिंह भदरु व विमलेंद्र सिंह राणावत ने उद्धेश्य व कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी। दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह ने वर्तमान समय के अनुरूप आपसी समन्वय व सामंजस्य की महत्ता के बारे में बताया। बैठक में समाज के लगभग 150 से ऊपर मेडिकल व पैरामेडिकल क्षेत्र के लोग उपस्थित हुए। संभाग प्रमुख बृजराजसिंह खारड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में जानकारी दी। जयपुर जिले की कार्य विस्तार बैठक का आयोजन खातीपुरा रोड स्थित फतेह निवास में संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर के सानिध्य में हुआ। फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य यशवर्धन सिंह झेरली ने SKPF के उद्देश्य व कार्यों पर विस्तार से उपस्थित समाज बंधुओं को बताया। पुष्कर में आयोजित केंद्रीय परिषद की बैठक में तय किए गए कार्यों के तहत उपस्थित समाज बंधुओं को विभिन्न दायित्व सौंपे गए। बैठक में महेंद्र सिंह खेड़ी, रूपेंद्र सिंह करीरी, भंवर सिंह पीपासर सहित अनेक समाज बंधु उपस्थित रहे। इसी दिन जैसलमेर जिले की नव गठित जिला टीम की बैठक का आयोजन संघ के क्षेत्रीय कार्यालय तनाश्रम जैसलमेर में हुआ । बैठक में केंद्रीय परिषद की बैठक में बनी कार्य योजना के बारे में उपस्थित टीम सदस्यों को विस्तार से बताया गया तथा उसी के अनुरूप उपस्थित टीम सदस्यों को विभिन्न कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी गई। बैठक में जैसलमेर जिला टीम सदस्यों के अलावा केन्द्रीय परिषद के सदस्य महेंद्र सिंह तारातरा, कमल सिंह भैंसड़ा, हरीसिंह सांकड़ा भी उपस्थित रहे। 15 फरवरी को बाडमेर शहर की बैठक का आयोजन हुआ जिसमें महेंद्र सिंह तारातरा ने फाउंडेशन के बारे में लोगों को बताया तथा आगामी एक वर्ष की कार्य योजना के बारे में बताते हुए बाडमेर में किस प्रकार फाउंडेशन के कार्यों को गति मिले इस पर विस्तार से चर्चा की गई एवं दायित्व सौंपे गये। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

संपादकीय

गत वैभव पर धीरज से हम कदम कदम बढ़ जायें

हमारा गत वैभव सदैव हमारे आकर्षण का विषय रहा है। हम जब भी इतिहास की बात करते हैं, रजपूती की बात करते हैं, क्षत्रियत्व की बात करते हैं तो हमारे विचार जगत में हमारा वह वैभवशाली अतीत उभरता है जिसमें हम इस संसार की मार्गदर्शक की भूमिका में थे, रक्षक की भूमिका में थे, सुविधा प्रदाता की भूमिका में थे। हमें हमारी वह स्थिति आकर्षित करती है जिसमें हमारे आस पास रहने वाले लोग हमारे त्याग और बलिदान के बल पर सुकून भरे जीवन का आनंद लेते थे और परिणाम स्वरूप वे लोग हमारे प्रति सम्मान का भाव रखते थे। हमारे पूर्वजों के संरक्षण में पलने बढ़ने वाले लोगों ने उन्हें ठाकुर तक की उपाधि दे दी जो भगवान विष्णु का एक नाम है। इस प्रकार हमें भगवान के समकक्ष तक कह दिया गया जो समस्त वैभव के स्वामी हैं और वही वैभव हमें आकर्षित करता है। लेकिन उस वैभव और हमारे बीच एक लंबा अंतराल है। भगवान राम के वैभव और हमारे बीच युगों का अंतराल है। भगवान कृष्ण और हमारे बीच पांच हजार वर्ष का अंतराल है। सम्राट युधिष्ठिर और हमारे बीच ऐसा ही बड़ा अंतराल है। सम्राट अशोक और हमारे बीच लगभग दो हजार वर्ष का अंतराल है। सम्राट मिहिरभोज और हमारे बीच 1300 वर्षों का अंतराल है। ऐसे ही राजा भोज और हमारे बीच अंतराल है। सम्राट पृथ्वीराज और हमारे बीच लगभग एक हजार वर्ष का अंतराल है। ऐसे ही जिन जिन का वैभव हमारे में आकर्षण पैदा करता है उनके और हमारे बीच कहीं सैंकड़ों, कहीं हजारों तो कहीं युगों का अंतराल है और इसीलिए वह वैभव हमारे से दूर भी है। उस तक पहुंचने की एक लंबी यात्रा है और वह यात्रा एक जीवन की नहीं बल्कि अनेक जीवनों की या यूं कहें अनेक पीढ़ीयों की यात्रा है। ऐसे में क्या हम यह मान लें कि वह वैभव हमारे लिए संभव नहीं है? क्या हम हमारा आकर्षण समाप्त कर देवें? क्या हम निराश होकर उसके बारे में सोचना ही बंद कर देवें? नहीं, यह दृष्टिकोण हमारी पूर्वज परंपरा के अनुकूल नहीं है। हमारा इतिहास हमें निराश होकर निष्क्रिय होने की स्वीकृति नहीं देता बल्कि निरंतर कर्मशील होकर भाग्य पर पुरूषार्थ का डंका बजाने को प्रेरित करता है। जिस जिस ने भी गंभीरता पूर्वक एक विद्यार्थी के रूप में इस इतिहास का अध्ययन किया है उसने यही पाया है कि हमारा यह वैभवपूर्ण इतिहास मृत्यु में से जीवन को जगाने में सक्षम है और जिसने भी ऐसा किया है उसने जीवन पाया है, जीवन का अर्थ पाया है, जीवन और मृत्यु के यथार्थ को जाना है। जिसने भी इस वैभवशाली अतीत का गंभीरता से विश्लेषण किया उसने इस ओर बढ़ने के लिए अपने जीवन का सर्वस्व दांव पर लगा दिया। पूज्य तनसिंह जी ने अपनी आत्मकथात्मक पुस्तक 'एक भिखारी की आत्म कथा' में इतिहास को संबोधित करते हुए लिखा है कि 'मैने अपने जीवन में केवल एक ही सत्य उपार्जित किया है और वह यही कि भिखारियों का समाज यदि कभी धनवान बन सकता है तो तेरे ही धन से, यदि कभी महान बन सकता है तो तेरी ही महानता से और यदि पवित्र बन सकता है तो तेरी ही पवित्रता से।' उन्होंने इसी धन, महानता और पवित्रता को धरती पर उतार कर उस वैभव की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया। उसी मार्ग से हम उस लंबे अंतराल को पाट सकते हैं जो हमारे और हमारे महान पूर्वजों के बीच उपस्थित है और जिसके कारण हमें हमारे पूर्वजों के वैभव के प्रति आकर्षण मृगतृष्णा की भांति लगने लगा है।

इस आलेख के शीर्षक में उल्लेखित पंक्ति पूज्य तनसिंह जी की ही रचना है। ये पंक्तियां 31 अगस्त 1947 को उनके द्वारा रचित एक गीत से ली गई हैं जो उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना के लगभग 8 माह बाद लिखा था। इस गीत में उन्होंने संघ के बारे में अपनी कल्पना को व्यक्त किया है और इसी गीत के मध्य में लिखा है-

संघ भूमि पर नियमित
जाकर ऐसी दीक्षा पावें,
गत वैभव पर धीरज से
हम कदम कदम बढ़ जावें।

यहां हमें स्पष्ट होता है कि वह गत वैभव हमारे लिए अलभ्य नहीं है लेकिन उसकी एक निश्चित प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया दीर्घसूत्री है और इसका दीर्घसूत्री होना एक स्वाभाविकता है। इस स्वाभाविकता का कारण वही अंतराल है जो हमारे और हमारे महान पूर्वजों के मध्य पैदा हो गया है और जिसका वर्णन इस आलेख में ऊपर किया जा चुका है। ऐसे में हमारी अस्वाभाविक जल्दबाजी या हमारा अस्वाभाविक अधैर्य हमें निराशा के अतिरिक्त कुछ नहीं दे पाएगा। इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने कदम कदम बढ़ जाने की बात की है। कदम कदम बढ़ जाने का अर्थ ही एक एक कदम बढ़ना है। जब अंतराल बहुत बड़ा हो और चलने वाले व्यक्ति की क्षमता से बाहर दिखाई पड़े तो एक उपाय तो निराश होकर मंजिल की चाह छोड़ना होता है और दूसरा उपाय अपनी क्षमता अनुसार कदम बढ़ा कर भविष्य के चलने वाले के लिए दूरी को कम कर देना होता है। व्यक्ति के जीवन और संसार को इस शरीर के जन्म और मृत्यु के बीच की अवधि मात्र मानने वाले लोग पहला मार्ग अपनाते हैं लेकिन जो लोग अपने जीवन को परमेश्वर की लीला का एक यंत्र मात्र मानते हैं या प्रकृति की क्रीड़ा का क्रीड़ा सहचर मानते हैं वे निराशा की अपेक्षा कदम बढ़ाना प्रारंभ करते हैं। एक एक कदम धैर्य से बढ़ाना प्रारंभ करते हैं और जब तक उनकी वर्तमान क्रीड़ा सहचर की भूमिका उपलब्ध रहती है उसे मनोयोग से पूर्ण करते हैं। ऐसे ही लोग विश्वात्मा के दृष्टिकोण से अपनी सार्थकता सिद्ध करते हैं। हमारे पूर्वजों ने यही किया और इसीलिए उनका जीवन उस वैभव से परिपूर्ण बना जो हमारे लिए आकर्षण का विषय है। ऐसे में हमारे लिए वरैण्य यही है कि हम हमारे उस आकर्षण को जीवित रखें और जागृत रखें। उसे मार्ग की दीर्घसूत्रता के कारण मरने न दें, बुझने न दें और इस वास्तविक स्वाभाविकता को समझ कर आगे बढ़ें कि पीढ़ियों के अंतराल को पाटने में पीढ़ीयां ही लगा करती हैं। हमारी पीढी उस अंतराल को जितने कदम कम कर पायेगी उतना ही मार्ग हम आने वाली पीढी के लिए कम कर देंगे और यही हमारे अस्तित्व की सार्थकता होगी। हमारे सामने एक अन्य प्रश्न भी खड़ा हो सकता है कि आखिर यह कदम बढ़ाना कैसे है तो इसका उपाय भी पूज्य तनसिंह जी ने इस पंक्ति से पहले वाली पंक्ति में दिया है। उन्होने संघ भूमि पर जाने को निर्देशित किया है, नियमित जाने को निर्देशित किया है और दीक्षा पाने को निर्देशित किया है। कौनसी दीक्षा है वह, यह वही दीक्षा है जो भगवान राम को राह चलते चलते ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने दे दी थी। यह वही दीक्षा है जो भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध की क्रीड़ास्थली में दी थी। यह वही दीक्षा है परिणाम की चिंता से मुक्त होकर हमारे जाज्वल्यमान इतिहास की निर्माता बनी और यह वही दीक्षा है जो हमारे जीवन को एक मनुष्य के रूप में, एक क्षत्रिय के रूप में सार्थक कर सकती है और अब तक हमारे महान पूर्वजों के जीवन को सार्थक करती आयी है। आयें हम अतीत के वैभव के प्रति हमारे आकर्षण को जागृत करें, प्रज्ज्वलित करें और फिर उस आकर्षण की तरफ धैर्य पूर्वक एक एक कदम बढाने के मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ को हमारे जीवन में अवतरित होने को आमंत्रित करें और हमारे इस जीवन को परमात्मा का क्रीड़ा सहचर बनने के दुर्लभ अवसर में परिवर्तित करें।

मेवाड़ का गुहिल वंश

मेवाड़ का गुहिल वंश भारतीय इतिहास में अपना एक महत्वपूर्ण और गौरवमय स्थान रखता है। मेवाड़ के गुहिल वंश का संबंध सूर्यवंश से है। उदयपुर राज्य (रियासत कालीन) से मिले शिलालेखों के अनुसार मेवाड़ के गुहिल वंश की वंशावली गुहिल (गुहदत, गुहादित्य) से प्रारम्भ होती है। शिलालेखों से गुहिल के शासनकाल की कुछ अधिक जानकारी नहीं प्राप्त होती है परन्तु आगरा के नजदीक चांदी के सिक्कों (लगभग 2000) का एक भूमि में दफन ढेर वि.सं. 1926 में पुरात्वविदों को मिला जिन पर 'श्री गुहिल' अंकित है इन सिक्कों से इतिहासकार यह निष्कर्ष निकालते है कि गुहिल एक स्वतंत्र शासक था जिसका शासन संभवतः आगरा तक विस्तृत था। यह भी संभव है कि गुहिल के पूर्वज अधीनस्थ शासकों के रूप में शासन कर रहे हो, और गुहिल ने एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की हो। गुहिल का शासनकाल छठी शताब्दी के मध्य में माना जाता है। गुहिल के बाद क्रमशः भोज, महेन्द्र और नागादित्य शासक बने। मेवाड़ में जनश्रुति है नागदा (जो कि नागवंशीयों का बसाया एक प्राचीन शहर था उसे नागादित्य ने पुनः निर्मित करवाया। नागादित्य का उत्तराधिकारी शीलादित्य हुआ, सामोली गांव के शिलालेख (वि.सं. 703) में शीलादित्य के बल पराक्रम के बारे में कहा गया है कि 'वह शत्रुओं को जीतने वाला, ब्राह्मणों, देवताओं और गुरुजनों को आनन्द देने वाला अपनी कुलरुपी आकाश का चन्द्रमा है।' शीलादित्य के बाद अपराजित शासक हुआ जिसकी उपलब्धियों के बारे में नागदा के निकट कुंडेश्वर मंदिर का शिलालेख से पता चलता है इसके अनुसार उसने सभी शत्रुओं को नष्ट किया और अनेकों राजा उसके समक्ष शीश झुकाते थे। उसके शासनकाल में अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ। अपराजित के बाद महेन्द्र द्वितीय शासक हुआ, जिसके बाद मेवाड़ का शासक कालभोज बना। कालभोज इतिहास में बापा या बप्पा रावल के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। कालभोज ने चित्तौड़ का किला मान मोरी से विजित किया था। बप्पा रावल से पूर्व गुहिलों की राजधानी नागदा थी, महेन्द्र के समय गुहिल राज्य की शक्ति काफी क्षीण हो गई थी लेकिन बप्पा रावल ने अपने बाहुबल से पुनः गुहिल राज्य का विस्तार कर उसे शक्तिशाली राज्य बना दिया। बप्पा रावल के बारे में जनमानस में अनेक दंत कथाएं प्रचलित हैं जिनमें से उनके गुरु हारित रिधि के आशीर्वाद से राज्य प्राप्ति अतिप्रसिद्ध है। बापा रावल का खुरासान तक आक्रमण करना और उसे विजित करना, अनेक नगर बसाना आदि लोक मान्यताओं में जीवित है। बाप्पा रावल ने अरब आक्रमणकारियों को भारत की सीमाओं से बाहर खदेड़ कर सीमावर्ती क्षेत्रों में अनेक सैनिक चौकियां स्थापित की जिसके बाद लम्बे समय तक भारत भूमि बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रही। बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मंदिर व आदिवाराह मंदिर का निर्माण करवाया। बप्पा रावल से सिक्के अनेक स्थानों पर मिले, जिनमें से अजमेर से प्राप्त सोने के सिक्के प्रमुख है। बाप्पा रावल का देहान्त नागदा में हुआ, जहां उनकी समाधि स्थित है। **(क्रमशः)**

सन्दर्भः (1) उदयपुर का इतिहास : गौरीशंकर हीराचन्द ओझा।

कार्य विस्तार बैठकें कर दिया सकारात्मक क्रियाशीलता का संदेश

छाबड़िया गढ

जैसलमेर

नवलगढ़

(पेज तीन से लगातार)

इसी क्रम में विगत 20 फरवरी को झुंझुनूं जिले की नवलगढ़ तहसील की तहसील स्तरीय कार्यविस्तार बैठक नवलगढ के गिरावडी हाउस में संपन्न हुई। बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने संघ व फाउंडेशन का परिचय देते हुए बताया कि हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि हमारे पास एक लंबी पूर्वज परंपरा है जिसके इतिहास से हमारा रोम रोम गौरवान्वित होता है। इस गौरव का कारण हमारे उन पूर्वजों में समाहित क्षत्रियत्व था जिसके बल पर उन्होंने क्षात्र धर्म का पालन किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी क्षत्रियत्व का शिक्षण है और यह शिक्षण प्राप्ति का नहीं बल्कि त्याग का शिक्षण है इसीलिए हमारे आकर्षण का विषय नहीं है। लेकिन यदि हमें राजपूत के रूप में अपना अस्तित्व कायम रखना है तो हमें इसे आकर्षण का केन्द्र बनाना पड़ेगा और उसी आकर्षण को जागृत करने के लिए संघ अनेक माध्यमों से कार्य करता है उनमें से ही एक माध्यम है श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन। इसके माध्यम से समाज के सकारात्मक सामाजिक भाव वाले युवाओं को संयोजित कर उन्हें समाज के लिए उपयोगी बनाने का कार्य किया जा रहा है। उपस्थित समाज बंधुओं को फाउंडेशन के उद्देश्य की प्राप्ति हेतु बनाए गए कार्य योजना बिंदुओं की विस्तार से जानकारी दी गई। विगत तीन वर्षों में इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी गई।फाउंडेशन की केन्द्रीय परिषद के सदस्य यशवर्धन सिंह झेरली ने श्री प्रताप फाउंडेशन के बारे में बताते हुए कहा की श्री प्रताप फाउंडेशन पूरे प्रदेश में राजपूत समाज से शत प्रतिशत मतदान करवाने हेतु मुहिम चला रहा है जिसमें युवाओं को अपनी सक्रिय भागीदारी निभानी हैं। बैठक में करनी सिंह गिरावड़ी, शक्ति सिंह झाझड़, विक्रम सिंह चिराणा, नरपत सिंह चिराणा, अरविंद सिंह बालवा, सुरेंद्र सिंह तंवरा सहित अन्य स्थानीय सहयोगी उपस्थित रहे। बैठक का संचालन शेखावाटी प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर ने किया। बैठक में नवलगढ तहसील के प्रत्येक गांव में संघ के संदेश पहुंचाने के लिए प्रतिमाह एक बैठक रखने की योजना बनी व जिम्मेदारियां तय की गईं। नवलगढ़ की बैठक के बाद सीकर जिले की फतेहपुर तहसील की कार्यविस्तार बैठक राजपूत छात्रावास फतेहपुर में रखी गई, वहां भी नवलगढ की तरह ही पूरे विषय को समझाकर फाउंडेशन का संदेश ग्रामीण स्तर तक पहुंचाने का कार्यक्रम बनाया गया। इसी दिन शाम को लक्ष्मणगढ़ के कुछ साथियों की बैठक रख कर लक्ष्मणगढ़ तहसील की कार्ययोजना पर चर्चा की गई। इसी दिन श्रीगंगानगर जिले की कार्य विस्तार बैठक चहल चौक स्थित राजपूत सभा भवन में आयोजित की गई। बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के बीकानेर शहर प्रांत प्रमुख खींवसिंह सुलताना ने संघ की स्थापना, समाज में किए जा रहे कार्यों और संघ के संस्थापक पूज्य श्री तन सिंहजी के जीवन के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य प्रताप सिंह कुमास ने फाऊण्डेशन के गठन से अभी तक किए गए कार्यों व आगामी सांगठनिक गतिविधियों पर विस्तारपूर्वक बताया। बैठक में जिले की विभिन्न तहसीलों की कार्यविस्तार बैठकों के कार्यक्रम बनाये गये।नागौर जिले की ग्राम पंचायत स्तरीय बैठक श्री ठाकुरजी मंदिर दौलतपुरा में रखी गई जिसमें फाउंडेशन के उद्देश्य, गठन व अब तक की कार्ययोजना पर चर्चा की गई। बैठक में फाउंडेशन की केन्द्रीय परिषद के सदस्य जय सिंह सागुबडी ने बताया कि श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन विगत तीन वर्षों से समाज में सकारात्मक भाव वाले युवाओं को संयोजित कर व्यवस्था के प्रति व्याप्त नकारात्मकता को दूर करने व समाज में सकारात्मक क्रियाशीलता को बढ़ाने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के आनुषंगिक संगठन के रूप में कार्य कर रहा है। बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के नागौर संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा, जिला परिषद सदस्य शंकर सिंह दौलतपुरा और गोपाल सिंह चावंडिया ने भी अपने विचार रखें। जयपुर टीम द्वारा इसी दिन गोकुलपुरा में पूर्व सैनिकों का स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। बैठक में पूर्व सैनिकों की सकारात्मक ऊर्जा को समाज में उपयोगी बनाने पर सार्थक चर्चा हुई, साथ ही पूर्व सैनिकों की पेंशन आदि समस्याओं के समाधान पर भी चर्चा की गई।बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के पूर्वी राजस्थान संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया, जयपुर ग्रामीण प्रांत प्रमुख देवेन्द्र सिंह बरवाली, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउन्डेशन के जयपुर जिला प्रभारी रूपेन्द्र सिंह करीरी, वीरेंद्र सिंह खिंदास, पूर्व सैनिक कैप्टन भंवर सिंह, शंकर सिंह खानपुर, कर्नल केसरी सिंह राठौड़, जसवंत सिंह बुड़ीवारा सहित अन्य पूर्व सैनिक एवं स्थानीय सहयोगी उपस्थित रहे।

जैसलमेर नगर टीम की बैठक 23 फरवरी को तनाश्रम में आयोजित हुई जिसमें नगर टीम के सभी सदस्य व सहयोगी उपस्थित रहे। बैठक में जिला कार्यसमिति की तरफ से मिले लक्ष्यों की क्रियान्वित को लेकर चर्चा की गई। सकारात्मक सामाजिक भाव वाले नये युवाओं से संपर्क स्थापित करने एवं उन्हें सहयोगी बनाने हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने को लेकर योजना बनाई गई। बाड़मेर की शिव तहसील की कार्यविस्तार बैठक शिव उपखण्ड मुख्यालय पर राव चाम्पा शिक्षण संस्थान में आयोजित हुई। इस बैठक पुष्कर में हुई केंद्रीय परिषद की बैठक में हुई कार्ययोजना के बारे में बताया गया। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य के तहत किये जाने वाले कार्यों का उत्तरदायित्व सौपा गया। बैठक में फाउंडेशन ने जिला समिति के कार्य को हर तहसील स्तर पर क्रियान्वयन हो उस के लिए जमीनी स्तर पर हम किस प्रकार लागू हो उस के बारे में चर्चा की गयी। केन्द्रीय परिषद के सदस्य महेंद्र सिंह तारातरा ने फाउंडेशन के द्वारा चलाये जा रहे कार्य समाज के हर व्यक्ति तक पहुंचाने में सभी के सहयोग की आवश्यकता बताई।

शिव

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

(पृष्ठ एक का शेष)

माननीय संघप्रमुख...

हीरक जयंती के माध्यम से श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्रचार-प्रसार सभी क्षेत्रों में हो गया है, अब हमें समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप कर्मक्षेत्र में उतर कर क्षत्रिय की परिभाषा को सार्थक करना है। कार्यक्रम में कीतासर, इंदपालसर, पुंदलसर, गोधासर, डूंगरगढ़, सेरूणा आदि गांवों के समाजबंधु भी सम्मिलित हुए।\भागीरथ सिंह सेरूणा ने कार्यक्रम का संचालन किया। संघ के शिविर कर चुके शिविरार्थियों से पृथक से मुलाकात करके माननीय संघप्रमुख श्री ने उन सभी से आगामी शिविरों में भाग लेने की बात कही। तत्पश्चात शाम 5:00 बजे झंझेऊ गांव स्थित शिवालय में कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते यूए माननीय संघप्रमुख श्री ने कहा कि क्षत्रिय सदैव अपने अधिकारों की अपेक्षा अपने कर्तव्य को ही महत्व देता आया है। हमारे महान पूर्वजों ने भी कर्तव्यपथ पर चल कर गौरवशाली इतिहास का निर्माण किया है। यह गौरव हमारी पूंजी है, लेकिन हमें इस पूंजी को बढ़ाने वाला बनना होगा तभी हम सपूत कहलाने के अधिकारी होंगे। केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने कहा कि सनातन धर्म और संस्कृति की रक्षा का दायित्व क्षत्रिय ने ही सदा से निभाया है। आज के बदले हुए दौर में उन सनातन सिद्धांतों की पुनर्स्थापना नए रूप में करना एक चुनौती है जिसे केवल सच्चा क्षत्रिय ही पूरी कर सकता है। यहां से माननीय संघप्रमुख श्री बीकानेर शहर स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन पहुंचे जहां शहर में रहने वाले स्वयंसेवकों के साथ बैठक की।

झंझेऊ

लखासर

माननीय संरक्षक...

शिविर में राजस्थान व गुजरात से लगभग 40 दम्पति उपस्थित रहे जिन्होंने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से पारिवारिक दायित्वों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में निर्वहन करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी व माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास भी शिविर में उपस्थित रहे।

माहेश्वरी चौहान और अनंतजीत सिंह नरूका का निशानेबाजी विश्व कप के लिए चयन

राजस्थान के अंतरराष्ट्रीय निशानेबाज माहेश्वरी चौहान और अनंतजीत सिंह नरूका को 8 से 19 मार्च तक साइप्रस में आयोजित होने वाले आईएसएसएफ निशानेबाजी विश्व कप के लिए भारतीय टीम में चुना गया है। इन दोनों का चयन दिल्ली में आयोजित डबल सलेक्शन ट्रायल के आधार पर किया गया है। माहेश्वरी चौहान का चयन महिला शॉटगन स्कीट इवेंट तथा अनंतजीत सिंह का चयन पुरुष शॉटगन स्कीट इवेंट के लिए हुआ है। माहेश्वरी चौहान जालौर जिले के सियाणा गांव की निवासी हैं और वह किसी अंतरराष्ट्रीय इवेंट में महिला शॉटगन स्कीट में व्यक्तिगत पदक पाने वाली पहली भारतीय है। इनके पिता प्रदीप सिंह व दादा गणपत सिंह भी राष्ट्रीय स्तर के निशानेबाज रह चुके हैं। उन्होंने कजाकिस्तान में आयोजित एशियन शॉटगन चैंपियनशिप में दो पदक जीतकर यह उपलब्धि हासिल की थी। अनंतजीत सिंह नरूका जयपुर के निवासी है और अपने पिता दलपत सिंह से मार्गदर्शन और प्रशिक्षण प्राप्त कर यहां तक पहुंचे हैं।

महिला विभाग ने मनाया 'रानी फूल कंवर जौहर दिवस'

श्री क्षत्रिय युवक संघ के महिला विभाग की स्वयंसेविकाओं द्वारा 20 फरवरी को जयपुर में रघुराज एकेडमी, बजरंग द्वार में चित्तौड़ के तीसरे जौहर का नेतृत्व करने वाली पत्ता चुंडावत की वीरांगना पत्नी रानी फूल कंवर के जौहर स्मृति दिवस में (23 फरवरी) के उपलक्ष में कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक दीप सिंह बैण्याकाबास ने कहा कि हमारे उज्ज्वल इतिहास के निर्माण में पुरुषों के साथ साथ महिलाओं का भी अद्वितीय योगदान रहा है। रानी फूल कंवर भी हमारे समाज की उन अनगिनत वीरांगनाओं में से एक है जिन्होंने कुल की मर्यादा की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर अपनी आने वाली पीढ़ी को कर्तव्य पालन का पाठ पढ़ाया। हमारी माताओं के ऐसे अचिंत्य बलिदानों से सींची गई हमारी गौरवशाली परंपरा और संस्कृति की रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है। चित्तौड़ दुर्ग के अन्दर तीन जौहर हुए। जब ऐसा मौका आ जाता था कि अब हम किसी भी तरह से अपनी इज्जत को नहीं बचा सकतीं हैं, तब क्षत्राणिया अपनी आन, बान और इज्जत की रक्षा के लिए खुशी-खुशी जौहर की ज्वाला में प्रवेश कर जाती थीं। केवल जलना ही जौहर नहीं होता था, अभी हम बात कर रहे हैं फूलकंवर की, इनसे पहले एक महाराणी हुई कर्मावती, उन्होंने भी जौहर किया था। उनसे पहले पद्मवाती हुई हैं उन्होंने भी जौहर किया था। जौहर ऐसे नहीं करते थे कि छोटी सी विपत्ति आ गयी और जौहर कर लें। उन्होंने जौहर किया था अन्तिम क्षणों में कि अब इसके अलावा कोई चारा नहीं है। परन्तु कर्मावती के समय में जसवंतकंवर राठौड़ नाम से एक महाराणी थी महाराणा सांगा की कर्मावती ने जौहर किया तथा जसवंत कंवर ने मदार्ना वेश धारण कर, घोड़े पर सवार हो तलवार लेकर युद्ध किया और युद्ध में अपने आप को समाप्त कर दिया वो भी अपने आप में एक जौहर था। जो अपनी रक्षा के लिए सक्षम हों उसे अपने कर्म को करना चाहिये, इसिलिए कहा यह जाता है कि 'या देवी सर्वभूतेषू नारी रुपेण संस्थितां, नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमः।' इन क्षत्राणियों ने हमारे समाज, देश और संसार को एक राह दिखाई है कि अपने कर्तव्य का पालन करते हुए यदि हमको अपना अस्तित्व भी मिटाना पड़े तो भी कर्तव्य को चुना जाए। आज लोग कह सकते हैं कि यह उनकी कायरता थी। कोई व्यक्ति जलती हुई अगरबत्ती के अंगुली लगाकर तो बता दे क्या महसूस होता है। वो तो उत्सव की रुप में अपने आपको ज्वाला में प्रवेश करती थीं। उस ज्वाला में प्रवेश करके अपने आप को उज्जवल बनाती थीं। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें इसी प्रकार कर्तव्य के निर्वहन के लिए तैयार कर रहा है। महिला विभाग द्वारा प्रतिमाह आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में इस कार्यक्रम का आयोजन हुआ। संतोष कंवर सिसरवादा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

(पृष्ठ एक का शेष)

पारिवारिक...

लेकिन जब वह खड़े होकर के बोले तो उनके दो-एक शब्द बहुत प्यारे लगे वहाँ के लोगों को। उन्होंने अंग्रेजी में कहा मेरे अमेरिकन भाइयों और बहनों। यही बात यहां रोज ही सब बोलते रहे हैं लेकिन उसको इतना महत्व नहीं मिलता क्योंकि यह स्वीकार कर लिया गया है। वहां ऐसा नहीं था और इसीलिए विवेकानंद जी के संदेश को दुनिया ने सुना और कई लोग तो उनके पीछे चलते हुए भारतवर्ष में आकर के बस गए। श्री क्षत्रिय युवक संघ की एक ऐसी ही घटना मुझे याद आ रही है कि एक बार सीकर में राजपूत छात्रावास में किसी कार्यक्रम में बोलने के लिए मैं गया था। कुछ महिलाएं जो टीचर्स थीं वे भी वहां आई थी। बुलाया उनको नहीं था लेकिन वे आ गई थी। मैंने मेरी बात कही, श्री क्षत्रिय युवक संघ की बात कही, शाखा और शिविरों की बात कही, संघ से जुड़ने की बात कही। तब उनमें से एक अध्यापिका ने मेरे से एक प्रश्न पूछ लिया कि आप श्री क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से संस्कारों का निर्माण करते हैं लेकिन बिना मां के संस्कारों का निर्माण किया जा सकता है क्या? यह प्रश्न सुनकर मैं हतप्रभ रह गया कि तुरंत क्या जवाब दूं, तो मैंने कहा कि आप कितना साथ देने के लिए तैयार हैं? केवल प्रश्न पूछने तक या आप कंधे से कंधा मिलाकर हमारे साथ काम कर सकती हैं? उन्होंने कहा हमें यदि अवसर दिया जाए तो महिलाएं भी उतना ही काम कर सकती हैं। मैंने कहा कि यदि ऐसा है तो तुरंत ही प्रारम्भ करना चाहिए। शेखावाटी में छह दिन के दौरे का कार्यक्रम बनाया गया जिसमें एक गाड़ी में स्त्रियां और एक गाड़ी में पुरुष चले। प्रतिदिन शाम को स्त्रियों को वापस अपने घर पहुंचाया गया और अगले दिन पुनः दौरे पर चलना होता था। इस घटना ने केवल श्री क्षत्रिय युवक संघ की दिशा को ही नहीं बदला बल्कि पूरे समाज की दिशा को बदल दिया। उससे पहले राजपूत महिलाओं को राजपूतों की मीटिंग में अथवा किसी अन्य मीटिंग में बुलाया ही नहीं जाता था लेकिन उसी समय से श्री क्षत्रिय युवक संघ के बालिकाओं और महिलाओं के शिविर प्रारंभ हो गए, महिलाओं की शाखा प्रारंभ हो गईं और आज हम देख रहे हैं कि हर कार्यक्रम में महिलाओं की बढ़ चढ़कर सहभागिता रहती है। उनके सहयोग के बिना काम नहीं हो सकेगा, विशेष तौर से संस्कारों का निर्माण तो कभी भी नहीं हो सकता। माननीय संरक्षक महोदय ने कहा कि इस कार्यक्रम में जो सारी चचाएं हुईं, इतनी अच्छी-अच्छी बातें आप लोगों ने बताई उनमें से मुझे एक वाक्य में सार कहने के लिए कहा जाए तो मैं कहूंगा कि परिवार बनता है सहनशीलता से और बिगड़ता है सहनशीलता के अभाव में। इस एक ही वाक्य में पूरी बात आ गई है। भाइयों के बीच में भी सहनशीलता होनी चाहिए, पिता-पुत्र के बीच में भी सहनशीलता होनी चाहिए, पति और पत्नी के बीच में भी सहनशीलता आ जाये तो संस्कारों की सरिता बह पड़ेगी और जो भी उल्टा पुल्टा हो रहा है, अपसंस्कृति हमारे ऊपर हावी हो रही है उसमें, समय तो लगेगा, लेकिन निश्चित रूप से परिवर्तन आ जाएगा। यह मेरी व्यक्तिगत 30-35 साल की अनुभूति है कि करेंगे तो हो जाएगा। तनसिंह जी कहा करते थे कि हमको कुछ प्राप्त करना है तो कुछ देना भी पड़ता है। बिना दिए कुछ मिलता नहीं और बिना किए कुछ होता नहीं। जो वस्तु हम प्राप्त करना चाहते हैं वह कीमत मांगती हैं और जो कीमत चुकाने को तैयार हैं उनको मनोवांछित फल मिलेगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें समझाता है कि अनावश्यक भार ले करके मत चलो। जितना कर सकते हो उतना ठानों और तुरंत करना शुरू कर दो। वेद का एक वाक्य तन सिंह जी सुनाया करते थे कि विश्वात्मा के दृष्टिकोण से तुम्हारे सहयोग की कहां आवश्यकता है, वहां अपनी क्षमता के अनुसार सहयोग करना शुरू कर दो और यदि क्षमता नहीं है तो उस क्षमता को प्राप्त करने में जुट जाओ। इसलिए प्रयत्नशील हमको होना चाहिए, प्रयत्न से ही सफलता मिलेगी। कार्यक्रम में बोलते हुए दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह ने रामायण के उदाहरणों के माध्यम से आदर्श परिवार की विशेषताओं की जानकारी दी। डा. लक्ष्मी कंवर झाड़ोल ने प्रेम व करुणा की व्याख्या करते हुए परिवार के संदर्भ में स्नेहभाव की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। दीपसिंह ऊलपुरा ने अहंकार को त्याग कर पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया। मीनाक्षी कंवर बेमला ने परिवार में महिलाओं की भूमिका पर अपनी बात कही। धनश्री कंवर सबलपुरा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन मेवाड़ मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने किया। केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली, मेवाड़ वागड़ संभाग प्रमुख भँवर सिंह बेमला सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

हृदय कपाट...

द्रोपदी की बात, जो महाभारत की है, उन खुले केशों की, जिसकी प्रतिज्ञा ली हुई थी कि जिसने मेरे इन बालों के हाथ लगाया है उसके खून से ही मैं इसको धोऊंगी और जिस दुष्ट ने मुझे अपनी जंघा पर बैठाने की कोशिश की है, मेरा पति जिस दिन उस जांघ को तोड़ेगा उस दिन मेरा प्रण पूरा होगा। अनेकों बार कही लेकिन लगता था जैसे रोज ताजी बात कह रहे हैं। यह गीत अपने आप में ऐसा है कि इसके बाद में विदाई की बात कहने की कोई आवश्यकता नहीं रहती। एक विदाई कार्यक्रम में पूज्य तनसिंह जी द्वारा कही हुई कुछ बातें मुझे याद आ रही है। 1965 में चुरू जिले में गोपालपुरा में शिविर था। उस समय उन्होंने विदाई के समय कहा था कि मुझे मां भगवती स्पष्ट दिखाई पड़ रही है जिसकी एक आंख में आंसू है और दूसरी आंख में मुस्कुराहट है। फिर उसको स्पष्ट किया कि हमारी दुर्दशा को देखकर के माँ रो रही है लेकिन आप लोगों को देख कर के माँ मुस्कुरा रही है कि ये लोग हैं जो मेरा सपना पूरा करेंगे। जो ना मुझे कभी भूलेंगे, ना कौम को कभी भूलेंगे, ना मयार्दाओं को भूलेंगे। इस पर हम कितने खरे उतरते हैं उसका प्रमाण हम ही दे सकते हैं अन्य कोई नहीं। अपने हृदय के कपाट को खुला रखें, प्रवेश करने दें संघ को। कोई प्रयत्न की आवश्यकता नहीं है, संघ प्रवेश कर रहा है। कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। एक और गीत में तन सिंह जी ने कहा है - जाओ, धूम मचा दो। जो कुछ यहां पाया है, उसका जो उत्साह है वह सबको दिखना चाहिए। दुनिया को पता होना चाहिए कि ये कहां से आ रहे हैं, ये कौन से बंजारे हैं, ऐसे कौन से दीप हैं जो अंधकार को मिटाने वाले हैं। तन सिंह जी इस प्रकार के उद्बोधन दे कर के, ऐसे गीत लिखकर के, ऐसे साहित्य की रचना करके इस संसार को जो अमूल्य निधि दे कर के गए हैं वह और कोई नहीं समझ सकता, हम समझ सकते हैं, हम को समझना चाहिए। **जय संघ शक्ति।**

छोटूसिंह जी भुरटिया का देहावसान

छोटूसिंह भुरटिया

बाड़मेर में संघ के स्वयंसेवक **छोटूसिंह भुरटिया** का विगत 15 फरवरी को देहावसान हो गया। आप जुलाई1993 में परो शिविर से संघ के संपर्क में आये और जीवन में 13 शिविर किए। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

शक्तिसिंह आसापुरा को पितृशोक

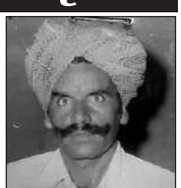
शक्तिसिंह आशापुरा

संघ के स्वयंसेवक **शक्तिसिंह आशापुरा** के पिताजी प्रतापसिंह जी राठौड़ का 21 जनवरी को 87 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

वयोवृद्ध स्वयंसेवक छोटूसिंह जी जाखली का देहावसान

छोटूसिंह जी जाखली

नागौर जिले में संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **छोटूसिंह जी जाखली** का दिनांक 20 फरवरी को देहावसान हो गया। आप मई 1952 में दांता में आयोजित शिविर में पहली बार संघ के संपर्क में आये एवं निरंतर संघ के संपर्क में बने रहे। आपने अपने जीवन में 43 शिविर किए। बालिका शिविरों में आपका विशेष योगदान रहा। अपने क्षेत्र की बालिकाओं को शिविर में लाने ले जाने या भेजने की व्यवस्था में सदैव संलग्न रहे। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

कानसिंह वेरावत का 454वां बलिदान दिवस मनाया

पाली जिले के छोटी रानी गांव में प्रतिवर्ष की भांति चित्तौड़गढ की रक्षार्थ 1568 में बलिदान हुए कानसिंह वेरावत का 454वां बलिदान दिवस उनके वंशजों द्वारा समारोहपूर्वक मनाया गया। वक्ताओं ने महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

दुर्घटना में घायल बच्चों को पहुंचाया एम्स जोधपुर

17 फरवरी को जैसलमेर के फलसुंड क्षेत्र में हुई दुर्घटना में स्कूल बस पलटने के बाद गंभीर घायल बच्चों को समय पर अस्पताल पहुंचाने में फलसुंड सरपंच रतनसिंह जोधा के त्वरित सहयोग ने बच्चों को बचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दुर्घटना की जानकारी मिलते ही वे अपने घर में चल रहे समारोह को छोड़कर तुरंत दुर्घटना स्थल पर पहुंचे व चार गंभीर बच्चों को अपने निजी वाहन से शीघ्रतापूर्वक एम्स जोधपुर पहुंचाया जिससे उन्हें बचाया जा सका। प्रशासन, बच्चों के परिजनों व क्षेत्रवासियों द्वारा उनकी सेवा भावना व त्वरित सहयोग के लिए सराहना की जा रही है।

चित्तौड़गढ़ में आभार प्रकटीकरण कार्यक्रम का आयोजन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर के हीरक जयंती समारोह के बाद चित्तौड़गढ़ पधारने पर 22 फरवरी को स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन भुपाल राजपूत छात्रालय में किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संरक्षक श्री ने कहा कि हीरक जयंती समारोह में ईश्वर की कृपा बरसी, संपूर्ण समाज का भरपूर सहयोग रहा। श्री क्षत्रिय युवक संघ तो निमित्त मात्र था। महिला, पुरुष सभी ने अपनेपन की भावना से अनुशासित रूप से जयपुर में केसरिया मेला लगा दिया जिसका पूरे संसार में एवं अन्य जातियों में एक श्रेष्ठ संदेश गया। हमारे जातीय भाव का महान स्वरूप हमने वहाँ देखा, एकता के साकार रूप के दर्शन किए। हमारी क्षमताओं को हम कौम की सेवा के लिए लगा दें क्योंकि यह कौम हमारी मां है। मां की सेवा की जाती है, उसे सुधारा नहीं जाता। हम तो अपने आपको सुधारें, अच्छे इंसान बनें तो संसार में ज्ञान रूपी प्रकाश स्वतः ही फैलता जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि सदियों से हमारा इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। उपनिषद, वेद लिखने वाले क्षत्रिय थे। हमने सदैव ऐसा आदर्श आचरण किया है जिसका अनुकरण करके संसार श्रेष्ठता की ओर बढ़ता रहा है। आज भी हमारा दायित्व है कि भटकते संसार को हम अपने आचरण से मार्ग दिखाएं। हम जो काम कर रहे हैं, उसको ईमानदारी और निष्ठापूर्वक करें तो श्री क्षत्रिय युवक संघ का सहयोग अपने आप हो जाएगा। समाज में पारिवारिक भाव का निर्माण हमारा अधिकार भी है और कर्तव्य भी है। गीता का ज्ञान जो भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को दिया था, वही ज्ञान रूपी गंगा श्री क्षत्रिय युवक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के रूप में पूज्य श्री तन सिंह जी ने 75 वर्ष पूर्व हमें दी। समाज और राष्ट्र की चेतना को ऊपर उठाने का कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। हम जागृत रहें, पतित नहीं बनें, आगे चलें, यह भाव हमारा बना रहे। केन्द्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली ने संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में पूर्व प्रधान शक्ति सिंह मुरलिया, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केंद्रीय समिति के सदस्य हर्षवर्धन सिंह रूद, जौहर स्मृति संस्थान के कोषाध्यक्ष नरपत सिंह भाटी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दिख रहे हैं सामाजिक समरसता बढ़ाने के प्रयासों के सकारात्मक परिणाम

22 दिसंबर 2021 को भवानी निकेतन में आयोजित श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती समारोह में अपने उद्बोधन में माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने सभी को ईश्वर की संतान बताते हुए जिस सामाजिक समरसता की बात कही थी उसके अनेकों अनुकरणीय उदाहरण समाज द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इसी कड़ी अजमेर में केकड़ी क्षेत्र के बिलिया गांव में सामाजिक सौहार्द का उदाहरण रखते हुए 18 फरवरी को धर्मराज हरिजन की पुत्री के विवाह समारोह में बारात व अतिथियों के भोजन व जलपान की समस्त व्यवस्था का उत्तरदायित्व गांव के ठाकुर गोपाल सिंह राजावत के परिवार ने निभाया। राजावत परिवार द्वारा बारातियों का स्वागत भी किया गया एवं कन्या को अपनी पुत्री के समान बताते हुए भारतीय परंपरा अनुसार उसके विवाह के निमित्त उपवास भी रखा। राजावत परिवार की इस पहल का दलित समुदाय के साथ अन्य समाजों द्वारा भी

स्वागत व सराहना की गई। परिवार के सदस्य चेतन सिंह राजावत ने बताया की 22 दिसंबर को हीरक जयंती समारोह में जब यह संदेश दिया गया कि दलितों को घोड़ी से उतारना क्षत्रिय धर्म नहीं है तभी उन्होंने यह संकल्प लिया था कि गांव में जब भी किसी दलित का विवाह होगा तो उनका परिवार स्वयं दूल्हे को घोड़ी पर बिठाकर उसकी बिंदोरी निकालेगा। यह सकारात्मक पहल सभी समाचार माध्यमों में प्रसारित हुई एवं सभी तरफ इस पहल का स्वागत किया गया। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक जी गहलोत ने गोपाल सिंह जी को फोन कर संघ के हीरक जयंती समारोह की चर्चा करते हुए उनके इस सद्संकल्प की सराहना की एवं इसे सभी समाजों के लिए अनुकरणीय बताया। उन्होंने कहा कि उनका यह कदम प्रदेश ही नहीं बल्कि संपूर्ण राष्ट्र में चर्चा का विषय है। ऐसा ही उदाहरण सीकर जिले के सामी गांव में राजपूत समाज के बंधुओं ने प्रस्तुत किया और उनके द्वारा मेघवाल समाज के दूल्हे को घोड़ी पर बिठाकर उसकी बिंदोरी निकाली गई। प्रशासन व पुलिस की उपस्थिति के बिना राजपूत समाज के बंधुओं ने ऐसा करके सभी को यह संदेश दिया कि किसी भी प्रकार का

दुष्प्रचार सदियों से चले आ रहे हमारे सामाजिक सौहार्द को नष्ट नहीं कर सकता। गांव के सरपंच सुरेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि हीरक जयंती के अवसर पर माननीय महावीर सिंह जी द्वारा दिए गए संदेश से प्रभावित होकर ही सामी ग्राम वासियों ने यह पहल की है। सीकर जिले के विभिन्न संगठनों व गणमान्य लोगों ने इस पहल की सराहना की। ऐसा ही एक और उदाहरण बाड़मेर जिले में चौहटन क्षेत्र के मते का तला गांव में भी सामने आया। यहां हाकमाराम मेघवाल की पुत्री के विवाह में नबे सिंह मते का तला व भाजपा जिला महामंत्री स्वरूप सिंह खारा ने दूल्हे को घोड़ी पर बिठाकर स्वयं घोड़ी की लगाम पकड़कर उसकी बिंदोरी निकलवाई। समाज में बढ़ते हुए इस प्रकार के उदाहरण इस बात का प्रमाण है कि सामाजिक समरसता को बढ़ाने के लिए किए जाने वाले प्रयासों का सकारात्मक परिणाम धीरे-धीरे सामने आ रहा है एवं सभी के साथ सम्मान एवं सौहार्दपूर्ण संबंधों की हमारी परंपरागत विशिष्टता पुष्ट हो रही है।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org